समाजशास्त्र

Date 28/7/20

Time -

भारतीय समाज व संस्कृति

BA Part II
Paper II

From-
Dr. Anil Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shergar College
Sasaram-

(Hindu Marriage)

विवाह का अर्थ एवं परिभाषा -

- विवाह समाज द्वारा स्वीकृत यौन सम्बन्धो को नियमित करने से सम्बन्धित एक सामाजिक संस्था है, प्रत्येक समाज मे यौन सम्बन्धो की स्थापना के बारे मे कुछ निश्चित नियम होते है। इन्ही मान्यता प्राप्त नियमो को विवाह कहा जाता है।

- प्रमुख विद्वानो ने विवाह की परिभाषाएँ निम्नलिखित प्रकार से दी है:-

→ वेस्टर मार्क के अनुसार - विवाह एक या अधिक पुरुषो का एक या अधिक स्त्रियो के साथ होने वाला यौन सम्बन्ध है जो प्रथा या कानून द्वारा मान्य होता है तथा दोनो पक्षो तथा उनके बच्चो के अधिकारो तथा कर्तव्यो का समावेश होता है।

→ लॉवी के अनुसार - विवाह उन स्वीकृत संगठनो को व्यक्त करता है जो इन्द्रिय सम्बन्धी सन्तोष (यौन सन्तुष्टि) के अतिरिक्त भी स्थिर रहता है तथा पारिवारिक जीवन को आधार प्रदान करता है।

विवाह के सामान्य उद्देश्य - विवाह एक सार्वभौमिक संस्था है। इसका कारण कुछ ऐसे सर्वमान्य उद्देश्य है कि इस संस्था द्वारा पूरे किये जाते है।

→ (1) यौन आवश्यकताओ की पूर्ति - यौन सन्तुष्टि भूख एवम् प्यास की तरह ही है एक मौलिक आवश्यकता है यौन सम्बन्धो को नियमित करने के प्रत्येक समाज मे कुछ नियम होते है यौन आवश्यकताओ की पूर्ति विवाह द्वारा की जाती है।

→ (2) परिवार का निर्माण एवम् समाज के लिए नए सदस्य प्रदान करना - समाज मे निरन्तरता बनाए रखने के लिए नए सदस्यो की आवश्यकता होती है यह कार्य विवाह के द्वारा परिवार का निर्माण करके तथा प्रजनन द्वारा नए सदस्य प्रदान करके पूरा होता है।

→ (3) सन्तान की प्रस्थिति एवम् उत्तरदायित्व का निर्धारण - विवाह स्त्री तथा पुरुष के यौन सम्बन्धो को नियन्त्रित करता है। यह उनसे सन्तान की प्रस्थिति एव उत्तरदायित्व को भी निर्धारित करता है।

→ (4) मानसिक सन्तोष - यह विवाह का चौथा महत्वपूर्ण उद्देश्य है पति तथा पत्नी एक दूसरे को अपनी उपस्थिति के द्वारा ही मानसिक सन्तोष प्रदान करते है तथा विचारो के आदान-प्रदान एवम् समस्याओ से जूझने के लिए मानसिक शान्ति प्राप्त करते है।

Scanned by TapScanner

(5) → आर्थिक सहयोग - विवाह के बाद पत्नी द्वारा घर की आर्थिक व्यवस्था सम्भाल ली जाती है पति अपनी पत्नी के प्रति अपने आर्थिक उत्तरदायित्व समझता हुआ धन कमाता है और स्वयं पर कम खर्च करता है। इस के कारण घर की आर्थिक व्यवस्था दृढ़ हो जाती है।

(6) → सम्बन्धों मे स्थायित्व - दो विभिन्न लिंगी प्राणियो के सम्बन्धो मे स्थायित्व प्रदान करना विवाह का एक प्रमुख उद्देश्य है। इससे भी समाज मे स्थिरता एवं स्थायित्व आता है।

→ हिन्दु विवाह की प्रक्रिया: (1) कन्यादान - हिन्दु विवाह मे कन्यादान प्रथम प्रक्रिया है वर के श्वशो पिता अपनी कन्या का दान करता है तथा कहता है कि - मैं इस गोत्र की गहनो से आभूषित कन्या का दान करता हूँ - वर उत्तर देता है - मैं स्वीकार करता हूँ आमन्त्रित व्यक्तियो एवम् बारातियो के समक्ष वर, पत्नी के साथ हमेशा रहने और उसकी रक्षा करने का वचन देता है।

→ (2) विवाह होम - कन्यादान के समय पुरोहित की आवश्यकता नही पड़ती है परन्तु होम के समय पुरोहित अग्नि जलाता है और वर-वधू अग्नि मे आहुति देकर विभिन्न देवी देवताओ को प्रसन्न कर सुख शान्ति की कामना करते है वेदी के एक तरफ कलश रखा जाता है।

→ (3) पाणिग्रहण - विवाह मे पाणिग्रहण को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है पाणिग्रहण मे वर-वधू एक दूसरे का हाथ पकड़कर छह मन्त्रो का उच्चारण करते है तथा एक दूसरे के जीवन भर साथ-रहने वर्ष तक जीने, पुत्र उत्पत्ति इत्यादि की प्रतिज्ञा करते है और पारिवारिक दायित्वो का पालन करने की शपथ लेते है।

→ (4) अग्नि परिणयन - पाणिग्रहण के बाद वर-वधू यज्ञ-कुण्ड का परिणयन गाठ बाधकर करते है। परिणयन करते समय अग्नि के समक्ष दोनो कहते है कि मैं स्वर्ग हूँ तू पृथ्वी है; तू सामवेद है मैं ऋग्वेद हूँ हम दोनो विवाहित है; सन्तान उत्पन्न करे, सन्तान दीर्घजीवी हो हम, हमारी सन्तान सौ वर्ष तक दीर्घायु है।

→ (5) अश्मारोहण - आरोहण का तात्पर्य चढ़ने से है इस प्रक्रिया मे अग्नि परिक्रमा के बाद पत्थर की शिला पर कन्या का भाई का पैर धोकर रखवाता है वर कहता है कि तुम शिला के समान दृढ़प्रतिज्ञ बनो अर्थात धार्मिक कार्य का पालन दृढ़ता से करो -

→ (6) सप्तपदी - अग्नि परिक्रमा फेरे के पश्चात् गाठ बाधकर वर-वधू दक्षिण - दिशा की ओर मन्त्रोच्चारण करते हुए सात पग चलते है ये सात पग सात प्रकार की कामनाओ को स्पष्ट करते है इसमे - अन्न, मानसिक शक्ति, अर्थ, शान्ति, पुत्र प्राप्ति पारस्परिक सहृदयता तथा कल्याण भावनाओ की कामना करते है।

- Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Sheesham College
Saharsa -
28/7/20

Scanned by TapScanner